ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 139-140
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

मन्नू भंडारी की रचनाओं में नारी अस्मता

डॉ0 कविता गुप्ता

हिंदी विभाग– राँची विश्विद्यालय, राँची (झारखण्ड), भारत

Received-19.07.2022, Revised-23.07.2022, Accepted-28.07.2022 E-mail: kavijgupta@gmail.com

सारांश:– *नारी भावनाओं से प्रसिद्धि प्राप्त करने वाली मन्नू भंडारी का लेखन नारी ह्रदय की परतों को खोलता है । उपन्यास 'आपका बंटी ' से लोकप्रियता बटोरने वाली मन्नूजी ने हिंदी साहित्य में नारी के उस रूप को प्रत्यक्ष किया है जिसे हमारा समाज खुलकर चर्चा करने में अपमान महसूस करता है ।*

कुंजीभूत शब्द– नारी भावनाओं, नारी ह्रदय, उपन्यास, लोकप्रियता, हिंदी साहित्य, प्रत्यक्ष,समाज, अपमान, जागृम, सम्मान।

उन्होनें जिस समय लेखन से नारियों को जाग्रत करना शुरू किए उस समय नारियों घर की चौखट लांघकर समाज के तबके वर्गों में प्रवेश कर रहे थे। जिस सवेंदनशीलता और स्नेह से वे अपने मिलने के चरित्रों को रचा है वे हिंदी साहित्य में किसी ने वापस नहीं किया है। विविध कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में मन्नू भंडारी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की लेखिका है, इन द्वारा रचित नाटक एकांकी बिना वाल्स के घर' का पहला संस्करण 1966 में प्रकाशित हुआ था जो उसके ठीक लदान वर्ष बाद दूसरा संस्करण भी था।

इस रचना में लेखिका ने स्त्री–स्वातंर्त्य के महत्वपूर्ण लेखों पर लेखों का ध्यान आकर्षित किया है और इसमें विशेष बात यह है कि यह पुरुष को संदेश है और उसे सतत सावधानी की मांग करता है। एक स्त्री और पुरुष के बीच की स्थितियाँ किस प्रकार की होती हैं शहरी गुलशनों को जन्म देता है ये सभी बातों की अंकन इस कृतकृत्यता में किया गया है। बीसवीं शताब्दी के हिंदी उपन्यास में मन्नू भंडारी का नाम बड़ी ही लोकप्रियता और सम्मान के साथ लिया जाता है। 1971 ई0 में 'आपका बंटवारा' लोकप्रिय उपन्यासों की अग्रिम पंक्ति में लिखा गया है।

स्त्री–विमर्श के बारे में भले ही कितनी ही बड़ी–बड़ी बातें की जाएं मन्नू भंडारी के बिना इस मामले की धरातल को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता है। इस उपन्यास का शीर्षक तो आपका टूटना यह कहना कठिन हो जाता है, कि कहानी टूट जाती है या उसकी माँ शकुन की। इसमें जरा भी दो राय नहीं है कि एक स्त्री का जायज महत्व और उसका आत्म–निर्भरता किसी भी पुरुष के लिए एक भयंकर चुनौती बन जाती है। बसल मनोवैज्ञानिक संदर्भ में स्त्री–विमर्श और स्त्री की चेतना का एक सफल प्रयास इस उपन्यास में किया गया है। बच्चे की इस चेतन में बड़ों की दुनिया को कथाकार मन्नू भंडारी ने पहली बार अपनाया है। इस रचना में लेखिका ने बच्चों के उस मार्मिक दृश्य का वर्णन किया है जो समाज में पूरी तरह से व्याप्त है, इसे स्वीकार करने की शक्ति में कहीं न कहीं कमी रह गई है।

बात भले ही नारी के प्रति सचेत हो पर जा नारी की उन्नति या संघर्ष की बात आती है तो सबसे पहले इसके खिलाफ पुरुषों की ही उठती है। और अगर पुरुष किसी नुकसान का हिस्सा हो तो इसका सीधा प्रभाव उन बच्चों पर पड़ता है जो इसकी साक्षी होते हैं। एक तीर से दो लक्षिते हुए लेखिका ने इस कृति में नारी की पहचान के बीच जद्दोजहद और दूसरी तरफ इस खींचतानी के बीच पिस्ता हुआ एक बच्चे की संवेदना है। तातपर्य यह है कि स्त्री की आजादी और आत्मनिर्भरता को लेकर पूरा परिवार किस प्रकार अपनी खुशियों की तिलांजली देता है।

पति की नई नौकरी के कारण अपने अस्तित्व और व्यक्ति को दाँव पर लगानेवाली नई नौकरी' कहानी की पात्रा 'रमा' अपनी चाहत और आकांक्षा का दम घोंट देती हसि ताकि वो अपने पति के साथ उसकी परछाई बन सके। विवाहित नौकरी पेशा महिलाओं के दर्द को ब्यां करती रमा के पति कुंदन के ये दावे पूरे नारी समुदाय को रोक सकते हैं – ''छोड़ो भी यार, वैसे भी क्या रखा है ऐशियंट इतिहास पाठ में। चोलवंश, चेदिवंश के बारे में न भी जानेंगे तो को सी जिंदगी हरीम हो जाएगी. ...मेरा सन्तोष दृष्टि संतोष नहीं है, मेरी तरक्की, तुम नहीं देखते हो?''[1]

अध्यापिका रही रमा जैसा पात्र समाज के हर कोने में फैल गया है। विवाह पूर्व और विवाहोपरांत कैसे स्त्री के जीवन की शैली है यही का प्रत्यक्षीकरण करती है मन्नू भंडारी की कहानियों की नारी पात्र। आर्थिक रूप से व्यक्तिपरक और आत्मनिर्भरता श्रुति का पति ऊचे पद पर है, लेकिन सवाल यह है कि उनके रिश्ते समझ में आते हैं। श्रुति दरार भरने की दरार' कहानी की नारी है ।

भारतीय समाज में विवाह को इतनी मान्यता मिल गई है कि इसे आसानी से नहीं तोड़ा जा सकता है। कहानी की पात्रा श्रुति अपने पति के अहमं से परेशान होकर उससे अलग रहने का निश्चय करती है तनाव से विवाद ही दोनों के बीच विवाद पैदा करता है, यह कहानी आज हर घर में पति–पत्नी की कहानी हो सकती है। आज और अपने अस्तित्व को बचाने

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

के लिए समाज की देखभाल किए बिना विवाह के बंधन को नकारती दृष्टि आती है तभी श्रुति संघर्ष करती है और द्वितीय के बाद अंतिम मैं अंतिम रूप से निर्णय लें 4 दिनों के लिए ही लिया है कि मैं अब अलग ही रहूँगी और वचन कह रहा हूँ निर्णय लेने के बाद से ही जैसे प्रकाश हो गया हूँ, एक तनाव से मुक्त हो गया हूँ।"[2]

लेखन के क्षेत्र में आज नारियाँ पूरी तरह से प्रगति पर हैं लेकिन अफसोस की बात है कि समाज की कुरीतियों ने नारियों का पद अभीतक नहीं छोड़ा है। खंडित दाम्पत्य जीवन का वर्णन करते हुए मन्नू भंडारी ने आधुनिक नारी की मुक्ति यात्रा दिखाया गया है। किस प्रकार का पुरुष अपनी स्वार्थी नारी की अस्मिता की तिलांजली देता है। एक महिला एक समय बिल्कुल ही मजबूर हो जाती है जब परिवार के चक्रव्यूह में उससे उसकी पहचान और अस्मिता को चाहा जाता है। उनके अस्पष्ट की नारी पात्र अधिकांशत खंडित दाम्पत्य जीवन के दर्द को शब्द देते हैं। और सच भी यही है कि पुरुष प्रधान व्यवस्था सदैव स्त्री से समर्पण ही चाहता है।

उपग्रह कथाकार की दृष्टि वहाँ तक पहुँचती है जहाँ एक सामान्य दृष्टि कभी नहीं पहुँचती है। मन्नूजी को हिंदी की आधुनिक कहानी धारा में विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है। उनकी गहरी मनोवैज्ञानिक पकड़ की झलक लगभग हर कृति में मिलती है। मध्यवर्गीय विरोधाभासों के बीच हिलोरें खाता मनुष्य अपनी मानसिक स्थिति को किस प्रकार संभालता है, इसका उल्लेख भी मैंने खो दिया' नामक कहानी में किया गया है। आधुनिकता के ऊहापोह में एक मध्यवर्गीय परिवार स्वयं पर कितना रहम कर पाता है इसका मार्मिक चित्रण भी किया गया है।

इस कहानी संग्रह में इंसानों की संवेदनाओं के धरातल पर पात्र अपने सपनों को खड़ा करते हैं। आजादी के बाद के भारत की राजनीतिक परिस्थतियों और नेताओं की दोहरी अभिव्यक्ति करते हैं तीन निगाहों की एक तस्वीर' नामक कहानी राजनीति के दलदल को फैलाती है इसप्रकार मन्नूजी की सभी कहानी संग्रह एक से बढ़कर एक है। नौकरशाही से उत्पन्न आम आदमी की दर्द से लेकर कामकाजी महिलाओं के संघर्षो को इन्होंने बखूबी व्यक्त किया है। समाज के रूढ़ जड़ताओं से व्याकुल इन्होंने अपने शब्दों से प्रतिनिधित्व किया है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भंडारी मन्नू, नई नौकरी (मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ), नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 2005, पृष्ठ संख्या– 365.
2. भण्डारी मन्नू,दरार भरने की दरार, (मेरी कहानियाँ) पृष्ठ संख्या–369.

*****